राष्ट्र एवं धर्म के नाम पर फैलाये जा रहे उन्माद के विरुद्ध तथा शांति एवं सद्भावना के लिए गांधीजनों का उपवास

शामिल होने की अपील

प्रिय मित्र,

पिछले दिनों देश में तेज़ी से बढ़ रही अप्रिय घटनाओं पर सर्व सेवा संघ (अ.भा.सर्वोदय मंडल) दुःखी एवं चिंतित है। चाहे ये घटनाएं अतिवादी एवं अनुत्तरदायी आलचनाओ का हो, साम्प्रदायिक हमलों एवं शिक्षण संस्थाओ की स्वायत्ता को नियंत्रित करने से संबंधित हो, हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के छात्र रोहित वेमुला की आत्महत्या की हो या जेएनयू परिसर की हो, हम सब इनसे स्तब्ध एवं मर्माहत हैं।

जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय (जेएनयू) परिसर में एक कार्यक्रम के दौरान भारत की बरबादी की कामना से प्रेरित नारे लगाना सर्वथा गलत है, पर उसके बाद देशभक्ति के प्रमाण - पत्र बांटने की जो होड़ मची है, वह देश के लोकतंत्र समर्थक नागरिकों की चिंता को बढ़ानेवाला है। पटियाला हाउस न्यायालय में पुलिस की उपस्थिति में छात्रों एवं पत्रकारों पर किये गए हमले गहरे साजिश की ओर इशारा करती है।

देशभक्ति के नाम पर बन रहे इस अराजक माहौल से नागरिकों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता खतरे में पड़ गयी है। लोकतंत्र की जड़ों को हिला देनेवाले इन कृत्यों से अघोषित आपातकाल जैसी स्थिति का आभास होता है. ज्ञात हो कि देशद्रोह का यह कानून अंग्रेजों ने औपनिवेशक हित की रक्षा तथा भारतवासियों के दमन के लिए बनाया था जिसका स्वतंत्र भारत में आज भी उपयोग हो रहा है. इस कानून पर नये सिरे से विचार करने की आवश्यकता है।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण का यह कथन हम सबके लिये मार्गदर्शक है -

''.. .. .. स्वतंत्रता मेरे जीवन का एक आकाशदीप बनी, जो आजतक वैसी ही बनी हुई है. कालांतर में यह स्वतंत्रता अपने देश की स्वतंत्रता मात्र के भाव का अतिक्रमण करके मनुष्य की सब जगह और सब प्रकार के बंधनों से मुक्ति ही नहीं, बल्कि इससे भी आगे बढ़कर मानवीय व्यक्तित्व की स्वतंत्रता, विचार की स्वतंत्रता, आत्मा की स्वतंत्रता की अर्थदात्री बन गयी।

स्वतंत्रता मेरे जीवन की निष्ठा बन गयी है. मैं रोटी के लिए, सत्ता के लिए, सुरक्षा के लिए, समृद्धि के लिए, राज्य की प्रतिष्ठा के लिए या किसी अन्य वस्तु के लिए इसके साथ समझौता नहीं कर सकता।''

सर्व सेवा संघ गांधी, विनोबा और जयप्रकाश के उदात्त विचारों एवं विरासत को संजोने व विकसित करनेवाला संगठन है। हम संकीर्ण राष्ट्रवाद और धर्मवाद की संकल्पना को अमान्य करते हैं. राष्ट्र एवं धर्म के नाम पर फैलाया जा रहा उन्माद न तो देश के लिए हितकारी है, न धर्म के लिए।

इस सम्बन्ध में **आचार्य विनोबा** की उक्ति पूरी दुनिया के लिए आदर्श है –

'' हम किसी देश-विशेष के अभिमानी नहीं
किसी धर्म-विशेष के आग्रही नहीं
किसी भी जाति-विशेष से बद्ध नहीं
सदविचारों को आत्मसात करना – यह हमारा धर्म.
विविध विशेषताओं में सामजंस्य प्रस्थापित करना,
विश्व वृति का विकास करना – यह हमारी वैचारिक साधना.''

हम इन घटनाओं को रोकने के लिये सभी पक्षों एवं सजग नागरिकों से सकारात्मक पहल एवं संवाद का आह्वान करते हैं।

इस संदर्भ में सर्व सेवा संघ एवं समानधर्मा संगठनॉ की ओर से **5 एवं 6 अप्रैल को दिल्ली के राजघाट में 36 घंटे के उपवास करने का निर्णय किया है.** ज्ञातव्य है कि 6 अप्रैल नमक सत्याग्रह दिवस है। उसी दिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने नमक बनाकर सत्याग्रह किया था। इसके कारण अंग्रेजी सल्तनत की नींव हिल गयी थी।

हम सर्वधर्म समभाव एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में आस्था रखनेवाले सभी कार्यकर्ताओं, छात्रों एवं नागरिकों से इस कार्यक्रम में शामिल होने की विनम्र अपील करते हैं।

दिल्ली का सम्पर्क सूत्र :
श्री अशोक शरण, संयोजक, दिल्ली प्रदेश सर्वोदय मंडल,
मो. 9810948870, इ मेल : sharanashok@yahoo.co.in

साभिवादन -

आपका,

महादेव विद्रोही
अध्यक्ष
सर्व सेवा संघ
मो. 9428825908